नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020: लागू करना तृतीय विश्वयुद्ध

डॉ. रोहताश जमदग्नि
भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, राजनीतिक विज्ञान विभाग, जीडीसीएम (पीजी) महाविद्यालय, भिवानी (हरियाणा) भारत

सारांश
सारांश यह है कि आज शिक्षा जगत एक व्यवसाय बन चुका है। क्या व्यवसाय से चरित्र निर्माण हो सकता है। चरित्र से मानव, समाज व राष्ट्र निर्मित होते हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 पर तात्विक विश्लेषण से यह कहा जा सकता है कि स्नातक के बाद विद्यार्थी सीधे विद्यावाचस्पति करेगा, असली तृतीय विश्वयुद्ध यही है कि स्नातक विद्यार्थी कलानिष्णात, दर्शननिष्णात के बिना कैसे विद्यावाचस्पति बनेगा। ऐसा महसूस हो रहा है जैसे नाबालिग अधेड़ को वरमाला पहना रही हो। इस वातावरण में टयूशन माफियाओं का साम्राज्य बढ़ेगा। अब तक तो गाइड कुछ तुच्छ कल्पना कर लेता था फिर तो दास्तव युग शुरु होने के कगार पर होगा इसीलिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 लागू करना तृतीय विश्वयुद्ध है। इतना ही नहीं, एक आयोग अनेक समस्या तथा संकाय खण्डिता प्रशासन व विद्यार्थी के लिए महाभारत से कम नहीं है। काश! केन्द्र व प्रान्त सास–बहू के युद्ध से बाहर आ पाए! कब सोया हुआ अध्यापक जागेगा जो उपस्थिति कर्तव्य निर्वहन, निरीक्षक कर्तव्य निर्वहन तथा मूल्यांकन कर्तव्य निर्वहन राष्ट्रहित में करने लगेगा। असल में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 लागू करना तृतीय विश्वयुद्ध इसीलिए है कि शिक्षक बेमौसम की बारिशों से थक व ऊब चुका है और यही शिक्षक इस नीति का मेरूदण्ड है। संविधान अच्छे व बुरे चलाने वालो की मंशा पर साबित होते हैं वैसे ही हमारी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 सफर करेगी। संविधान में डीपीएसपी भी हैं जो लागू नहीं हो पाए, वैसे चरित्र निर्माण शिक्षा, शिक्षक, शिक्षालय के साथ समाज पर भी निर्भर रहते हैं जो शायद चरित्र निर्माण कर सकें। मैकाले व मैक्सवेल शिक्षा व न्याय से निकालना उतना ही कठिन है जितना जाति से जातिवाद और धर्म से धार्मिकता। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 सांस्कृतिक परिवर्तन और मानसिक बदलाव के आवरण वाली है भारतीय वातावरण साक्षी है संस्कृति विरोधियों द्वारा राष्ट्र खण्डित हुए तथा मानसिक बदलाव हेतु म्यान तलवारें छोड रही हैं। भारत को विश्वगुरु की पदवी पर यह नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 बैठा सकती है मगर हर हिन्दुस्तानी हिन्दीवासी को इस नीति के क्रियान्वयन रूपी तृतीय विश्व युद्ध की आग में जलकर सोना बनना होगा।

मुख्य बिन्दुः– भारतीय संविधान, केन्द्र व राज्य, मैकाले व मैक्सवेल, बदलाव व परिवर्तन, भारत विश्वगुरु

I भूमिका

हम भारतीय है। हमारा सुनहरा अतीत है। सामाजिक संरचना के एक उदाहरण से नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 को लागू करने के मामले में समझाने या बताने का तुच्छ प्रयास है कि जोड़ा बनाना, विवाह करना, बच्चे जनना, जिसमें नाई जोड़ा बनाता था, दोनों पक्ष विवाह करते थे, दम्पत्ति बच्चें पैदा करते थे। सरकार ने शिक्षा नीति जोड़ा बना दिया, प्रशासन ने शिक्षा नीति विवाह कर दिया, शिक्षक ने चरित्र निर्मित, समाज हितैषी, ज्ञान भण्डारित, राष्ट्र निर्माता बच्चें पैदा करने हैं। शिक्षक यह तभी कर पाएगा जब वह चाणक्य शैली का दृष्टिकोण अपनाएगा।

संविधान निर्माताओं के अनुसार राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांत अनुच्छेद 33 से 51 के अन्तर्गत हैं। संविधान निर्माता बनाकर पास हुए, संसदीय लोकतन्त्र लागू न करके अधर में लटका है, जनता जनार्दन इनके लिए संघर्षशील न होकर फेल है। अच्छी बातों का यही परिणाम होता है क्योंकि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भी अच्छी है। भारतीय जनता अच्छी बातें पचाने की आदी नहीं है। हमें चोरी के माल में ज्यादा आनंद आता है क्योंकि हम लड़–झगड़ सकें और अपने आप को सर्वोत्तम व्याख्याकार साबित कर सकें, जिनका ज्वलंत प्रमाण हमारा संविधान है जो उधार का थैला कहा जाता है। मामले का सटीक उदाहरण यह है: 1. घटना–भीमा कोरेगांव–जनवरी 2018 2. मसला– राष्ट्रीय जांच एजेंसी पुणे ने आरोप पत्र दाखिल किया 3. आरोपी– हिंसा भड़काने वाले स्टेन स्वामी (जो भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी माओवादी संगठन का सक्रिय सदस्य, इसका धन जुटाने वाला, इसके फ्रंटल संगठन 'आर्गनाइजेंशन प्रासीक्यूटेड प्रिजर्नस सालीडेरिटी' कमेटी का संयोजक व प्रचारक) गौतम नवलखा (आई.एस. आई. का सम्पर्क सूत्र) 4. स्वयं न्यायालय व न्यायधीश–1. पीपुल्स यूनियन ऑफ लिबर्टीज ने स्टेन स्वामी की गिरफ्तारी अमानवीय बताई। 2. कांग्रेसी खड़गे ने गिरफ्तारी पर आपत्ति जताई। 3. एन.सी.पी. प्रमुख शरद पवार ने कहा कि केन्द्र का इस तरह राज्य से स्वयं जांच लेना गलत है। 4. झारखण्ड सीएम हेमंत सोरेन का कहना है कि यह गिरफ्तारी असहमति की आवाज दबाना है। 5. प्रशांत भूषण स्टेन स्वामी को भला आदमी बताते हैं। रामचन्द्र गुहा, योगेन्द्र यादव तथा प्रीतिश नंदी भी इस गिरफ्तारी का विरोध कर रहे हैं। ये सब संविधान को अपनी रखैल बनाकर बयानबाजी कर रहे हैं। माननीय न्यायालय ने कई उदाहरण स्थापित कर रखे हैं। एक उदाहरण बता रहा हूं:– डी.यू. के प्रोफेसर जी.एन. साईं बाबा भी माओवादियों से सम्बन्ध रखने के आरोपी थे। इन्हीं स्वंय न्यायालय व न्यायधीशों ने संवैधानिक मर्यादाएं पहले भी तोड़ी थी। प्रो. साई बाबा सेशन कोर्ट में दोषी पाए गए थे और कोर्ट ने कहा था कि ऐसे लोगों के लिए आजीवन कारावास की सजा काफी नहीं है।

II हमारी शिक्षा नीति बनाम हमारी क्रियान्वयन नीति

जो भी लोग इस नीति को लागू करेंगे उन्हें इस नीति के पीछे की सोच और तर्क को समझना होगा। तभी इसको लागू किया जाएगा। वरना एक राष्ट्रवादी नीति को यह क्रियान्वयन तबाह कर देगा। इस नीति में साहसिक व परिवर्तनकारी परिवर्तन हैं। जिससे मैकाले को दफनाया जा सकता है।

(क) यदि हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति की विचार प्रक्रिया को इसके क्रियान्वयन में बनाए रखने में फेल हो जाते हैं तो अनुवाद और परिवर्तन में इसका सार खो जाएगा।
(ख) यह नीति 'सांस्कृतिक परिवर्तन' की कहानी है।
(ग) लोगों की मानसिकता में बदलाव लाने वाली नीति है।
(घ) पिछले चार वर्षों ने पुरातन चालीस वर्षों में बदलाव ला दिया है।
(च) हम अगले दशक तक लागू करें सही ठीक से करें फिर देखना अगली शिक्षा नीति इंसानों के द्वारा नहीं बल्कि 'आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस' द्वारा लिखी जाएगी क्योंकि इस शिक्षा नीति में लोकतन्त्र है। जून 2017 में प्रख्यात वैज्ञानिक पदम विभूषण डॉ. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मसौदे के लिए एक समिति का गठन किया गया जिसमें '' दो लाख से ज्यादा सुझाव शामिल हैः 2.5 लाख ग्राम पंचायतों, 6600 ब्लॉकों, 6000 यू.एल.बी., 676 जिलों से आए हैं।''(1)

IV नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 संग जनता जनार्दन की बदलती सोच

शिक्षा संविधान के सन्दर्भ में समवर्ती सूची का मामला है। शिक्षा संविधान की सातवीं अनुसूची में है। भारतीय छात्रों के बीच हुए एक ऑनलाइन सर्वे के करीब 96.40 प्रतिशत छात्रों को नई नीति के परिणामों से उत्साहजनक उम्मीद बंधी है, फिर केन्द्र सास तो राज्य बहू के रूप में कब आमने–सामने हो जाए, इसके साक्ष्य पुरातन शिक्षा नीतियों के अन्तर्गत तुलनात्मक अध्ययन यूं हैः–

(क) तुलनात्मक अध्ययन

(i) 1968 की प्रथम शिक्षा नीति का जोर रहा–14 वर्ष तक के सभी बच्चों की शिक्षा जरूरी
(ii) 1986 की द्वितीय शिक्षा नीति का पुरजोर रहा–सामाजिक समूहों के बीच विषमता घटाना
(iii) 2020 की तृतीय शिक्षा नीति का मसला रहेगा–अर्थव्यवस्था की बढ़ती हुई आवश्यकताओं के अन्तर्गत स्थानीय व वैश्विक मानव संसाधन में संतुलन का प्रयास स्थापित करना।

(ख) 1986 बनाम 2020ः– इन दोनों के बीच अन्तर यूं हैंः–

(i) समाज का विजन
(ii) सामाजिक उद्देश्य
(iii) शिक्षा का उद्देश्य।

(ग) समाज का विजन–तुलनाः– समाज विज्ञान के अन्तर्गत 1986 की नीति समान अवसर पर मानकीकरण पर आधारित मगर 2020 की नीति अपनी पसंद विशेष के क्षेत्र में व्यक्तिगत क्षमताओं को पैना करेगी। तथ्यः– नई शिक्षा नीति 2020 में विषय चयन की स्वतन्त्रता।

(घ) सामाजिक उद्देश्य–तुलनाः– 1986 की नीति वंचित वर्गों के समावेशन पर केन्द्रित मगर 2020 की नीति कौशल आधारित समझ और रोजगारपरकता पर केन्द्रित। तथ्यः– नई शिक्षा नीति 2020 में माध्यमिक शिक्षा और उसके बाद विभिन्न स्तरों पर तकनीकी कौशल उपलब्धता।

(च) शिक्षा का उद्देश्य–तुलनाः– 1986 की नीति विश्व और मानव की समझ पर मुख्य रूप से ध्यान केन्द्रित मगर 2020 की नीति नागरिकों के ज्ञान, कौशल एवं व्यक्तिगत विकास के साथ राष्ट्रीय विकास पर केन्द्रित। तथ्यः– नई शिक्षा नीति–2020 में पाठ्यक्रम रूप रेखा समालोचनात्मक सोच, विमर्श और विश्लेषणात्मक समझ को संजोए है। इतना ही नहीं, 1986 की नीति ने शिक्षित एवं प्रशिक्षित मानव संसाधनों का ऐसा वर्ग तैयार किया जिन्होंने ''वैल्यू चौन'' में योगदान दिया वहीं 2020 की नीति ऐसे मानव संसाधन के निर्माण का स्वप्न रखती है जो खुद ''वैल्यू चौन'' के नए आयाम का सृजन करे।

V नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के परिप्रेक्ष्य में सम्भावनाएं व परिवर्तन

(क) पलायन रोकेगीः– चीन में 111, इजराइल में 825 और अमेरिका में 432 तथा भारत में 50 शोधार्थी प्रति एक लाख के अनुपात में भारत और विश्व का चित्र प्रस्तुत करते हैं। यह शिक्षा नीति उच्च शिक्षण संस्थानों में शोध बढ़ाएगी।

(ख) शोध–गुणात्मकताः– शोध नवाचर व बहुआयामी शोध लाएगी। छात्रवृत्तियां खा–खाकर भारतीय उफर गए हैं ये छात्रवृत्तियां सबसे ज्यादा भारत में दी जा रही हैं।

(ग) संचार कौशलताः– हमारी शिक्षा नीति–2020 अन्तरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप है जिससे संचार कौशलता बढ़ेगी।

(घ) गुणवत्ता–कौशलताः– अंकध्रतिशत प्रतिस्पर्धा समाप्त कर यह शिक्षा नीति गुण व कौशल देगी।

(च) रोजगार युक्तः– हर छात्र शिक्षा के दौरान किस एक निजी क्षेत्र में व्यावसायिक कोर्स पर स्नातकोत्तर हासिल करेगा।

(छ) आईक्यू–ईक्यूः– इस नीति में इंटेलीजेंस क्योशेंट (आईक्यू) के साथ–साथ इमोशनल क्योशेंट (ईक्यू) पर ध्यान दिया गया है।

(ज) अन्तराल का समापनः– 2020 की शिक्षा नीति नीति शोध और शोध के अन्तर को समाप्त करेगी।

(झ) राष्ट्र निर्माणः– 2020 की नीति का उद्देश्य राष्ट्र निर्माण है।

(ट) शिक्षा में स्वतन्त्रताः– क्वालिटी एजुकेशन पर ज्यादा काम के बदले ज्यादा ऑटोनॉमी देगी।

(ठ) छात्र श्रम की महत्ताः– नई शिक्षा नीति से स्टूडेंट एजुकेशन और डिग्निटी ऑफ लेबर पर ध्यान देती है।

(ड) वर्चुअल लैबः– टैक्नोलॉजी आधारित ई. कंटेंट बनाए जाएंगे, वर्चुअल लैब बनेगी।

(ढ़) विभिन्न विषयों का अध्ययनः– उच्च शिक्षा को स्ट्रीम से मुक्त करके मल्टीपल एग्जिट तथा मल्टीपल एंट्री और अकादमिक क्रेडिट बैंक के जरिये विभिन्न विषयों का अध्ययन कर सकेंगे।

(त) अध्ययन विरामः– विद्यार्थी जरूरत मुताबिक बीच में छोड़कर दोबारा पढ़ाई कर सकते हैं।

(थ) शिक्षक–गरिमाः– नई शिक्षा नीति शिक्षकों की गरिमा रखेगी।

(द) श्रेष्ठ नागरिकः– नीति से सम्भावना है कि वह श्रेष्ठ नागरिक बनायेगी।

(ध) वैश्विक मानवः– मानव से मानवता, जड़ों से जुड़ाव, अतीत से आधुनिकता की ओर जाकर विश्व मानव बनाना इस नीति से अनेक सम्भावनाएं हैं।

(प) विदेशों में कैम्पसः– नई शिक्षा नीति भारत के विश्वविद्यालय विदेशों में अपने कैम्पस खोल सकते हैं जिससे बढ़ोतरी की सम्भावनाएं बढ़ेंगी।

(फ) भारत में विदेशी विश्वविद्यालयों के कैम्पसः– विदेशी विश्वविद्यालय भारत में अपने कैम्पस खोलने से मिलकर कार्य करने से अनेक सम्भावनाएं जगेंगी।

(ब) आत्मा भारतीय बनाम शरीर वैश्विकः– नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत ढांचा विश्वस्तरीय होगा मगर आत्मा हिन्दुस्तानी होगी जिससे विकास की समतुल्य सम्भावनाएं होंगी।

(भ) एक भारत–श्रेष्ठ भारतः– शिक्षा की सार्थकता भी तभी है जब छात्र का सर्वांगीण विकास हो। आत्मनिर्भर भारत के रास्ते नई शिक्षा नीति देगी।

(म) विदेशियों आओः– स्टडी इन इंडिया और स्टे इन इंडिया द्वारा विदेशी छात्रों को अपने भारत में अध्ययन और शोध के लिए लुभाने में अनेक सम्भावनाएं होगी।

(य) 21वीं सदी का आधारः– छात्र अपने पैशन के आधार पर शिक्षा लेंगे जिससे सम्भावनाएं हैं कि यह भारत का आधार बनेगा।

(र) प्राचीनता बनाम आधुनिकताः– क्रिटिकल थिंकिंग और इनोवेटिव थिंकिंग तभी सम्भव है जब छात्र आधार व पैशन पर शिक्षा पाएं जिससे सम्भावनाएं हैं कि वह प्राचीनता व आधुनिकता का पुल बन सकेगा।

(ल) समतामयी शिक्षाः– यह नीति सभी श्रेणी एवं वर्गों के विद्यार्थियों को समानतापूर्वक गुणवत्तापरक शिक्षा देने के रास्ते सम्भावनाएं तलाशती नजर आती हैं।

(व) विश्वव्यापी स्तरः– स्कूली शिक्षा ही विश्वव्यापी शिक्षा का आधार होगी।

(श) राष्ट्रीय शोध संस्थानः– अच्छा शोध–अच्छी उच्च शिक्षा के लिए राष्ट्रीय शोध संस्थान होगा जिससे अनेक सम्भावनाओं को पूरा किया जाएगा। प्रो. डॉ. दिनेश शर्मा, उप मुख्यमन्त्री, उत्तर प्रदेश राष्ट्रीय समाचार पत्र दैनिक जागरण में 'शोध संस्कृति को बढ़ाने वाली शिक्षा नीति', नामक लेख के अन्तर्गत लिखते हैं कि अच्छे अध्यापक, अच्छा कंटेंट सभी छात्रों को मिल सकेगा।

VI नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020 के सन्दर्भ में चुनौतियां व कठिनाइयां

(क) भोजन वितरण चुनौतीः– यू.एन. की संस्था यूनिसेफ द्वारा भोजन व्यवस्था को भारत ने अपनाया, कोरोनाकाल में ऑनलाइन शिक्षा प्रार्दुभाव में बाल–पोषणाहार की चुनौती

(ख) संकाय दुविधा चुनौतीः–''11–12 कक्षा में संकाय (कला–वाणिज्य–विज्ञान) की समाप्ति से विद्यार्थियों के संकाय से सम्बन्धी चुनौती''(2)

(ग) बी.एड. पाठ्यक्रम चुनौतीः– संगीत व खेलकूद पर जोर से बी.ए. बी.एड. पाठ्यक्रम चार वर्षीय करने की चुनौती

(घ) एक आयोग अनेक समस्या भी चुनौतीः– भारतीय उच्च शिक्षा आयोग आयेगा तो यू.जी.सी., ए.आई.सी.टी.ई. संस्थाएं समाप्त होंगी, एक अकेला आयोग उच्च शिक्षा पर नजर रख पायेगा–महत्वूपर्ण चुनौती

(च) शोध–शिक्षण विभाजन एक चुनौतीः– शोध केन्द्रित और शिक्षण केन्द्रित विश्वविद्यालयों में विभाजन, वो भी ब्रिटेन की तर्ज पर, वो लोग बिना संविधान के, और हम विश्व के सबसे बड़े संविधान के मालिक, अन्तर्विरोध में चुनौती

(छ) चार प्रपत्र एक चुनौतीः– स्नातक उपाधि के अन्तर्गत विद्यार्थी की मर्जी कि एक वर्ष बाद प्रमाण पत्र, दो वर्ष बाद डिप्लोमा, तीन वर्ष बाद उपाधि, चार वर्ष बाद शोध स्नातक उपाधि पाए, भारतीय विद्यार्थी तीन वर्ष को ही बेरोजगारी के सन्दर्भ में 300 वर्षों के रूप में देखता है और फिर मर्जी वर्ष–दर–वर्ष, भारतीय सामाजिक संरचना अवस्थाओं तथा शारीरिकता के अनुसार विवाह बन्धन के कारण चार वर्षीय उपाधि की बाध्यता रखें बिना पाठ्यक्रम पूरा करवाना भी एक चुनौती

(ज) स्नातक बनाम विद्यावाचस्पति एक चुनौतीः– स्नातक के बाद सीधा विद्यावाचस्पति करना, यह ब्रिटेन का चाल चलन है, जहां डायना को अपने पुत्र के पिता का नाम भी मालूम नहीं, हम भारतीयों को उज्जवला शर्मा के अपने पुत्र रोहित शेखर शर्मा के पिता नारायण दत्त तिवारी का नाम याद है। जबकि यह सब समाज व संस्कृति की पराकाष्ठा का निम्नतम उदाहरण है, मगर है चुनौती

(झ) देश–विदेश वातावरण एक चुनौतीः– हमारी स्कूली शिक्षा जीरो है जिससे 12वीं के छात्रों को स्नातक का पाठ्यक्रम समझ नहीं आता, जब भारतीय विदेश जाते हैं तो उन्हें एक साल के 'प्री–कोर्स' के अन्तर्गत भाषा व गणित उसी राष्ट्र के अनुरूप सिखाया जाता है। इस सन्दर्भ में भी स्नातक उपाधि एक चुनौती

(ट) दर्शननिष्णात समाप्ति एक चुनौतीः– नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत दर्शननिष्णात उपाधि की समाप्ति, विद्यावाचस्पति का छोटा भाई था उसकी समाप्ति की भी एक चुनौती है

(ठ) केन्द्र बनाम राज्य एक चुनौतीः– केन्द्र बनाम राज्य का संकट भी एक चुनौती है उदाहरणः– राज्य तमिलनाडु ने केन्द्र के नवोदय विद्यालयों का विरोध यह कहकर किया कि हम पर हिन्दी थोपी जा रही है, जिसके कारण नवोदय वाली गुणवत्तामयी शिक्षा से राज्य के छात्र वंचित रह गए।

(ड) अध्यापक शिक्षण एक चुनौतीः– शिक्षक–शिक्षा की गुणवत्ता आज तक क्यों नहीं बढ़ाई जबकि शिक्षण को ट्रेनिंग के बजाय एक अकादमिक विषय के रूप में स्थापित करने की बात कोठारी कमीशन ने कही थी, 1993 में एन.सी.ई.आर.टी. संस्था आई जो बी.एड. संकायों के नियमन ही पूरे करवाती रही, राष्ट्र–निर्माता प्रशिक्षित स्नातक बनते रहे जो श्यामपट्ट पर चार सीधी लाइनें तक नहीं लिख सके, यह है सबसे बड़ी व महत्वपूर्ण चुनौती

(ढ) अभिभावक असंतुष्टि एक चुनौतीः– हर अभिभावक चाहता है कि शिक्षा भारतीयता के अनुरूप हो, प्राचीन ग्रन्थों का बोध कराए, व्यक्ति चरित्र निर्माण हो, समाज का कल्याण हो, ज्ञान के विकास की गंगा बहे उदाहरणतयाः ऐसे कि शिक्षक–शिष्या, शिक्षिका–शिष्य दम्पत्ति बने, नहीं!नहीं नहीं!!नहीं नहीं नहीं!!! शिक्षक हेतु विद्यार्थी शिक्षक के लिए औलाद स्वरूप भारतीय संस्कृति में हैं उदाहरणः–महाभारत में अर्जुन से विराट शासक ने अपनी पुत्री उत्तरा का विवाह करना चाहा तो अर्जुन ने उत्तरा को अपनी शिष्या रूपी बेटी कहते हुए उत्तरा की शादी अपने बेटे अभिमन्यु से करवाई, क्या है शिक्षा नीति–2020 इन चुनौतियों को स्वीकार करेगी–यह भी चुनौती

(त)यन्त्ररूपी अध्यापक एक चुनौतीः– पूर्ण–रुपेण प्रशिक्षित–संतुष्ट, नियमित–अध्यापक, छात्र–अध्यापक अनुपात, अध्यापकों को अन्य प्रशासनिक कार्यों से स्वतन्त्रता, अधिकारियों की नजरों में शिक्षकों का सम्मान क्या यह नीति इतना कुछ कर पाएगी–यह है कि राष्ट्र निर्माता की उदासीनतामयी धधकती चुनौती

(थ) विद्यार्थी शत्रु बनाम राष्ट्र विरोधीः अध्यापकयीय शैली एक चुनौतीः– कक्षीय विद्यार्थी को टयूशन पर पैसे की एवज में अभिभावकों को उत्तीर्णता की गारंटी देने वाला लालची–हरामखोर राष्ट्र विघटक प्राणी, कब स्वयं को एक विकसित व्यक्तित्व का धनी बना पाएगा, कब तक यह आदमखोर प्राणी स्वंय जंगित रहकर राष्ट्र–भविष्य के साथ खेलता रहेगा, क्या यह विश्वगुरु की पदवी की ओर बढ़ते भारत का अवरोधक ही बना रहेगा, नई शिक्षा नीति को इसे सुधारने की भी चुनौती है

(द) अध्यापन साध्य बनाम अध्यापक साधन एक चुनौतीः– नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का सफल व सुलभ क्रियान्वयन प्रशासन व सरकार से ज्यादा आंख मीचकर उपस्थिति दर्ज करने वाले, स्वार्थों के आधार पर रोते–पीटते पाठ्यक्रम पूरा करने वाले, समय के अन्तर्गत धनराशि के एवज में मूल्यांकन करने वाले तथा अध्यापक–अध्यापन को गृहस्थ जीवन का साधन मानने वाले को क्या यह नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 राष्ट्र निर्माता के पठन–पाठन को पृथ्वी आधारित जीवन को साध्य बना पाएगी–यह चुनौती सार्वभौमिक–सार्वकालिक–सार्वलौकिक है। सत्यम–शिवम–सुन्दरम।

VII निष्कर्ष

गांधी सबकी जेब में है। प्रयोगकर्ता पर निर्भर है कि वह शराब–कवाब–शवाब या चरित्र का निर्माण–समाज का कल्याण–ज्ञान का विकास, इन दो पथों में से किसका राही बनता है। ''वैसे देश में तीन प्रकार के गांधीवादी कार्यरत हैंः

(क) सरकारी गांधीवादी–पं. नेहरू।
(ख) मठाधीश गांधीवादी– विनोभा भावे
(ग) कुजात गांधीवादी– डॉ. राममनोहर लोहिया।''(3) अंग्रेजी में काम न होगा, फिर से देश गुलाम न होगा, डॉ. राम मनोहर लोहिया का सबसे प्रसिद्ध नारा था जिन्होंने हिंदी की वकालत की। ऐसी सोच, ऐसे निर्णय ही इस नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 को लागू करने की नींव का आधार हो सकते हैं। लोहिया जैसे दृढ़ संकल्पी इरादों वाला व्यक्ति ही इस शिक्षा नीति का क्रियान्वयन उसी ढंग से कर सकता है जिस ढंग से यह बनाई गई है क्योंकि लोहिया ने हमेशा ही मन और पेट की लड़ाई का तथा काका कालेकर आयोग द्वारा पिछड़ी जातियों की हिस्सेदारी की वकालत का, अम्बेडकर संग नया दल बनाने की इच्छा रखने वाले डॉ. लोहिया ने अपना जन्मदिन कभी नहीं मनाया। उनका जन्मदिन 23 मार्च को आता है और उस दिन शहीदी दिवस होता है। इतना ही नहीं, डॉ. लोहिया ने एक तीर से दो निशाने का काम भी महिला सशक्तिकरण व जातिवादी जड़ों को काटने के लिए किया है। उदाहरण यूं हैंः– चुनाव 1962 का था, राजमाता विजयाराजे सिंधिया के मुकाबले में डॉ. लोहिया ने वाल्मीकि महिला सुखोरानी को चुनाव लड़वाया था। इस शिक्षा नीति के अन्तर्गत भी लोहिया की रणनीति काम कर सकती है। वरना यह शिक्षा नीति प्रथम व द्वितीय शिक्षा नीति की तरह एक शिक्षा नीति बनकर रह जाएगी। बैंकों में धन नहीं, असल धन विद्यालयों में है, सुनहरे भविष्य की मंजिल का रास्ता विद्यालय–महाविद्यालय–विश्वविद्यालय की शाश्वत–सापेक्षित विजय के बाद मिलता है, सच्चाई है। यह भी सच्चाई है कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम शिक्षा मंत्रालय हो गया है। हम वैश्विक पंचायत की इज्जत करते हैं। शैक्षणिक, मनोविज्ञान और यूनेस्को की 2008 की रिपोर्ट के अनुसार

(i) मातृभाषा से संप्रेषण और संज्ञान सहज एवं शीघ्र होता है।
(ii) संस्कृति की अवधारणा शक्तिशाली बनती है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में ये दोनों तत्व शामिल हैं। प्राचीन भारतीय दर्शन में निहित 'सर्व भूत हिते रत् और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः', को गांधी जी ने जॉन रस्किन की पुस्तक 'अन टू दिस लास्ट' में पाया जिसे गांधी ने कहा–''सबकी भलाई में ही प्रत्येक की भलाई है।''

सन्दर्भ ग्रन्थ

[1] सितम्बर प्रतियोगिता दर्पण।

[2] 7 अगस्त 2020, दैनिक जागरण।

[3] 12 अक्तूबर 2020, दैनिक जागरण।